Topic — THEORIES OF SOCIAL CHANGE

(सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत)

Sol. हम सब जानते हैं कि जब सामाजिक ढाँचे में कोई हेर-फेर होता है तो उसे सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है। वास्तव में समाज एक स्थिर व्यवस्था नहीं है और इसलिए समय बदलने के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन। जीवन में कुछ या अनेक परिवर्तन होते ही रहते हैं। प्रश्न यह है कि ये परिवर्तन क्यों होते हैं? दूसरे शब्दों में इन परिवर्तनों के कौन-कौन से कारण हैं? इन कारणों को विभिन्न विद्वानों ने अलग-अलग ढंग से प्रस्तुत किया है। अर्थात, सामाजिक परिवर्तनों के सम्बंध में विद्वानों के प्रमुख सिद्धांतों का विवेचन निम्नलिखित है —

(1) माल्थस का जनसंख्या सम्बंधी सिद्धान्त
(Malthusian theory of population)

माल्थस ने सन 1798 में 'An Essay on principles of population' नामक पुस्तक में जनसंख्या सम्बंधी अपने सिद्धांत को प्रतिपादित किया है। श्री माल्थस के अनुसार ① मानव-जीवन मुख्यतः खाद्य सामग्री की पूर्ति (Supply of food) पर आधारित है और इसके बिना मनुष्य का जीवन असंभव है। ② यौन-सम्बंधी मूलप्रवृत्ति (Sexual instinct) स्त्री-पुरुष दोनों में सार्वभौमिक है। ③ इस मूल प्रवृत्ति के कारण संतानों की जन्म दर इतनी तेजी से होता है कि अन्य बाधाओं की अनुपस्थिति में किसी देश की जनसंख्या लगभग 25 वर्षों में दोगुनी हो जाती है परन्तु वहाँ के जीवन-निर्वाह के साधनों

खाद्य सामग्री की उत्पत्ति इस अनुपात में नहीं होने पाती क्योंकि कृषि में क्रमागत ह्रास-उत्पत्ति नियम बहुत जल्दी लागू हो जाता है। माल्थस के अनुसार जनसंख्या ज्यामितीय वृद्धि (Geometrical progression) अर्थात 1, 2, 4, 8, 16. आदि तथा खाद्य सामग्री अंकगणितीय वृद्धि अर्थात 1, 2, 3, 4 - -) आदि नियम द्वारा नियंत्रित होती है। अतः एक ऐसा समय आ जाता है जबकि जनसंख्या प्रतिबन्ध के अभाव में इतनी बढ़ जाती है कि उसे जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त मात्रा में खाद्य-सामग्री उपलब्ध नहीं हो पाती है।

इस प्रकार माल्थस के अनुसार यदि किसी देश में बढ़ती हुई जनसंख्या को रोका न जाये तो उस देश की जनसंख्या वहाँ की खाद्य-सामग्री की पूर्ति की अपेक्षा अधिक तेजी से बढ़ती है। ऐसी विषम परिस्थिति में अति जनसंख्या को खाद्य-सामग्री की पूर्ति के समान करने के लिए अर्थात दोनों में सन्तुलन स्थापित करने के लिए दो अवरोधक क्रियाशील हो सकते हैं।

(i) नैसर्गिक अवरोध (ii) निवारक अवरोध

नैसर्गिक अवरोध वह है जो स्वयं प्रकृति समाज पर लागू करती है। जब देश में अति जनसंख्या की स्थिति होती है और खाद्यान्न की पूर्ति बहुत कम हो जाती है तो इस समस्या का समाधान प्रकृति करती है। कुछ प्राकृतिक अवरोध जैसे-प्लेग, हैजा, चेचक तथा ऐसी ही दूसरी भयंकर बीमारियां, अकाल, बाढ़, भुखमरी आदि क्रियाशील होते हैं। जिनके कारण अतिरिक्त जनसंख्या नष्ट हो जाती है उतनी ही जनसंख्या बच जाती है जितनों को खाद्य पूर्ति होती है।

निवारक अवरोधक वे होते हैं जो स्वयं समाज के सदस्यों द्वारा लागू किये जाते हैं अर्थात् जनता स्वयं इतनी समझदार हो जाये कि सन्तति निरोध, नैतिक संयम आदि निवारक अवरोधों की सहायता से जनसंख्या को अधिक बढ़ने न दे। इस प्रकार प्रथम अवरोधक द्वारा मृत्यु दर में वृद्धि करके तथा दूसरे अवरोध द्वारा जन्मदर में कमी करके जनसंख्या व खाद्य-सामग्री में संतुलन स्थापित किया जाता है और इन दोनों अवस्थाओं में सामाजिक परिवर्तन अवश्य होता है।

समाप्त